M.A. Semester-I
Philosophy CC-02
Unit-II

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Problem of evil according to Rabindranath Tagore.

अशुभ की समस्या दर्शन की एक मुख्य समस्या रही है। खास तौर से यह समस्या ईश्वर को सर्वशक्तिमान और अच्छा समझते हैं। ऐसा समझने के कारण उनके सामने एक द्विविधा उपस्थित होती है जिसे इस प्रकार रखा जा सकता है यदि ईश्वर अच्छा है और वह सबका भला चाहता है, साथ ही वह विश्व का स्रष्टा है तब विश्व में अशुभ क्यों आया? और अगर ऐसी बात है कि ईश्वर चाहते हुए भी विश्व में अशुभ होने से नहीं रोक सका तब ऐसी हालत में हम ईश्वर को सर्वशक्तिमान नहीं कह सकते हैं। अतः यदि अशुभ है तब ईश्वर को अच्छा नहीं कहा जा सकता और यदि ईश्वर को अच्छा मानते हैं तब वैसी हालत में अशुभ को नहीं होना चाहिए। ईश्वरवादियों ने अशुभ की समस्या के समाधान हेतु अनेकों युक्तियाँ पेश की है। चूँकि रविन्द्रनाथ टैगोर एक ईश्वरवादी दार्शनिक है इसलिए उनके सामने भी अशुभ एक समस्या है जिसके समाधान हेतु उन्होंने निम्नलिखित युक्तियाँ पेश की है —

(1) रविन्द्रनाथ के अनुसार अशुभ शुभ का साधन है। अशुभ वस्तुतः अपने आप में अन्त नहीं है। यह उद्देश्य नहीं है बल्कि यह साधन मात्र है, जिसके आधार पर शुभ की प्राप्ति होती है। Tagore ने लिखा है — Pain which is the feeling of our finiteness, is not a fixture in our

life. It is not an end in itself as joy is."
(Sadhana p. 48)

अतः ठाकुर के अनुसार अशुभ, अशुभ के लिए नहीं बल्कि शुभ की प्राप्ति के लिए होता है।

(2) ठाकुर का विचार है कि अशुभ शुभ बनने की एक अवस्था है। ठाकुर ने इस बात की पुष्टि एक उदाहरण के आधार पर करनी चाही है नदियों के किनारे होते हैं पर ये किनारे नदी नहीं है। यह ठीक है कि किनारे नदी के पानी को बाहर जाने से रोकते हैं परन्तु रोकना इनका उद्देश्य नहीं बल्कि नदी के बहाव को नियन्त्रित कर उसे एक निर्दिष्ट दिशा की ओर भेजते हैं। ठीक उसी प्रकार अशुभ देखने में बुरा लगता है लेकिन यह जीवन को नियन्त्रित कर एक निर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। अतः अशुभ शुभ की एक अवस्था है।

(3) पुनः ठाकुर के अनुसार अशुभ नैतिक प्रयोजन को सिद्ध करता है। ठाकुर का कहना है कि जिस प्रकार सोने को जितना तपाया जाता है उसमें उतनी ही चमक आती है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य जितना तकलीफ और पीड़ा से अपना जीवन व्यतीत करता है, वह उतना ही सबल और नैतिक रूप से उच्च होता है। दुःख मनुष्य में निराशा उत्पन्न करने के बजाय और भी उसमें इतनी शक्ति भर देता है जिससे वह हर प्रकार की कठिनाईयों का सामना कर सकता है। अतः अशुभ नैतिक प्रगति के लिए मुख्य वस्तु है।

(4) पुनः मनुष्य खुद ही अशुभ के लिए जिम्मेदार है। ईश्वर मनुष्य में इच्छा स्वतन्त्रता देता है। मनुष्य अपनी इच्छा स्वतन्त्रता के अनुसार अच्छे एवं बुरे दोनों विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करता है

तब अशुभ की उत्पत्ति होती है, अतः अशुभ के लिए ईश्वर जिम्मेदार नहीं, बल्कि मानव खुद जिम्मेदार है।

(5) साथ ही ठाकुर का विचार है कि शुभ का अर्थ स्पष्ट करने के लिए अशुभ का होना जरूरी है। जिस प्रकार बिना प्रकाश का अर्थ समझे अंधकार का अर्थ समझना मुश्किल है जिस प्रकार रात का अर्थ समझे बिना दिन का अर्थ समझना मुश्किल है उसी प्रकार जब तक अशुभ का अर्थ नहीं समझते तब तक शुभ की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतः शुभ के अर्थ को समझने के लिए अशुभ का होना जरूरी है।

(6) ठाकुर ने बताया कि वस्तु देखने में काली लगती है, लेकिन वस्तुतः वह वैसी नहीं है। ऐसा लोग समझते हैं कि मृत्यु में दुःख और पीड़ा है लेकिन ठाकुर ने बताया कि मृत्यु तो जीवन की पूर्णता है। यह एक ऐसी बिन्दु है जहाँ जीवन का एक नया अभ्यास प्रारम्भ होता है। ठाकुर ने लिखा है—

"Death is not the ultimate reality. It looks black, as the sky looks blue, but it does not blacken existence, just as the sky does not leave its stain upon the wings of the bird."
(Sadhna P. 50)

Critical Comments — (1) रविन्द्रनाथ ठाकुर का यह कहना कि अशुभ शुभ का साधन है यथार्थ नहीं जँचता। उनका विचार है कि यह सीमित प्राणियों के लिए सम्भव है कि वह अशुभ जिस साधन को अपना कर शुभ की प्राप्ति करता है, ऐसा वह इसलिए करता है क्योंकि उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि बिना अशुभ के वह शुभ की

प्राप्ति कर सके। लेकिन यह बात ईश्वर के लिए सत्य नहीं होती, क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और सर्वशक्तिमान प्राणी होने के नाते वह बिना अशुभ का सहारा लिए भी शुभ की प्राप्ति कर सकता है। अतः यह कहना कि अशुभ शुभ की प्राप्ति का साधन है, पर्याप्त नहीं जँचता।

(2) साथ ही यह कहना कि अशुभ से नैतिक ~~प्राप्ति~~ प्रगति होती है पर्याप्त नहीं जँचता। यह ठीक है कि कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो दुःख और पीड़ा के कारण नैतिक दृष्टिकोण से प्रगतिशील होते हैं। परन्तु ज्यादातर ऐसा देखा जाता है कि व्यक्ति दुःख और पीड़ा के कारण नैतिक रूप से प्रगतिशील होने के बजाय बहुत बड़ा अपराधी हो जाता है। अतः यह कहना कि अशुभ से नैतिक प्रगति होती है पर्याप्त नहीं जँचता।

(3) पुनः रविन्द्रनाथ ठाकुर का यह कहना कि मनुष्य अशुभ के लिए जिम्मेदार है, पर्याप्त नहीं। यह ठीक है कि मनुष्य के सामने में दो विकल्प रहते हैं और अपनी इच्छानुसार वह उन दो विकल्पों में से किसी एक को चुनता है। लेकिन मनुष्य में दिये गये ये दो विकल्प उसके अपने नहीं होते बल्कि ईश्वर ही उनमें इच्छा स्वतन्त्रता देता है जिसके आधार पर वे विकल्पों का चुनाव करते हैं। अतः अशुभ के लिए ईश्वर जिम्मेदार है।

(4) पुनः ऐसा कहना कि शुभ के अर्थ को समझने के लिए अशुभ का होना जरूरी है, पर्याप्त नहीं जँचता। क्या ये जरूरी है कि हम मीठे आम के स्वाद को समझने के लिए खट्टे आम खायें? क्या यह जरूरी है कि सुखी जीवन को समझने के लिए हम अस्पताल का जीवन व्यतीत करें। अतः शुभ को समझने के लिए यह जरूरी नहीं है कि अशुभ हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रविन्द्रनाथ ठाकुर के द्वारा प्रतिपादित अशुभ के समाधान की अनेक आलोचनाएँ पेश की गयी है। वस्तुतः अशुभ की समस्या ही एक ऐसी समस्या है, जिसके समाधान हेतु इसी प्रकार की युक्तियाँ दी जा सकती है। रविन्द्रनाथ ठाकुर ने बताया कि चाहे जो हो हमें एक बात याद रखनी चाहिए —

"Come what may, have a strong mooring, in your own self. Evils and pains shall come and shake the very foundation of life but never, never loose confidence."

मा नाः दुःखे चित्तेर विक्षेपे